बाप का बेटे से बोलना

तू बड़ा हो रहा है
तो मैं भी कुछ बड़ा ही हो रहा हूं
जब तू और छोटा था
तेरे मचलने को बस तेरा बचपना समझता था
नहीं जानता था कितनी कचोट हो सकती है
बालक के मन में
क्योंकि तब तू जो था सो था ही
मैं भी तब आज से छोटा था
तब मैंने सोचा था शायद तरसता है
भूख से, लालच से तू कभी
अब जानता हूं कि तब कितना कड़वापन
कितनी मरोड़ कहीं अंतर में होती रही होगी!
अब बड़े होने पर जानता हूं, बच्चे
बड़े होते जाते हैं
लेकिन सुरक्षित नहीं होते।
अपने बच्चों की पीड़ा ही अनुभूति है
पीड़ा की
अपनी खुद की पीड़ा में बहुत बनावट है
और दूसरों की पीड़ाएं सच्ची नहीं। न

रघुवीर सहाय
('कुछ पते कुछ चिट्ठियां' संग्रह से साभार)